पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

नीमास्त्र

खेती का रक्षा कवच

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

नीमास्त्र क्या है?

नीमास्त्र सबसे आसानी से बनाया जा सकने वाला बहुत प्रभावकारी जैविक कीटनाशक है जो सभी प्रकार की फसलों/पौंधों में लगने वाले कीड़ों विशेषकर चूसक कीड़ों व घुन कीड़ों को नष्ट करने में काफी कारगर है।

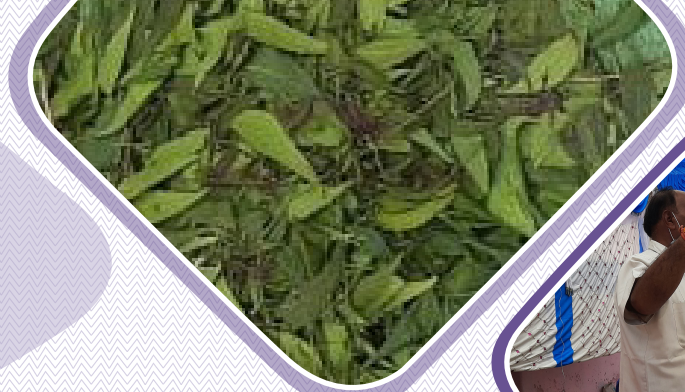

नीमास्त्र
खेती का रक्षा कवच

नीमास्त्र बनाने का प्रशिक्षण लेते परसवाड़ा के ग्रामीण

नीमास्त्र से होने वाले लाभ

नीमास्त्र फसलों को सबसे ज्यादा नुकसान करने वाली इल्लियों, सुण्डियों, पत्तों में छेद करने वाले कीड़ों को नष्ट करने में काफी कारगर है। हर 8 से 10 दिन के अंतराल में इसके छिड़काव से पौंधे कीड़ों के प्रकोप से बचे रहते हैं और हमें अधिक और अच्छी गुणवत्ता की उपज मिलती है।

नीमास्त्र बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. नीम के पत्ते – 5 किलोग्राम
2. नीम की फली/ नीम खली – 5 किलोग्राम
3. देसी गाय का ताजा गोबर – 3 किलोग्राम
4. मिटटी का बर्तन – 1 (स.)
5. प्लास्टिक की बाल्टी – 1 (स.)

नीमास्त्र को उपयोग करने का तरीका

10 लीटर नीमास्त्र को 200 लीटर पानी के साथ मिलाकर लगभग एक एकड़ खेत में छिड़काव किया जा सकता है। बस ध्यान रहे इसे हमेशा ठन्डे छायादर स्थान में ही रक्खें और इसके अधिक प्रभाव के लिए शाम के समय ही इसका छिड़काव करें। एक बार बनाये गए नीमास्त्र का उपयोग 6 महिने तक किया जा सकता है।

नीमास्त्र बनाने की प्रक्रिया

- नीम के पत्ते और नीम की खली/नीमफल को कूट कर बाल्टी में डाल ले।
- फिर इसमें गौमूत्र और गोबर डालकर डंडे की सहायता से मिला लें।
- अब बाल्टी का मुँह किसी कपडे से बांधकर छायादार स्थान में रखकर छोड़ दें। इसे 5 से 7 बार डंडे की सहायता से घड़ी की सुई की दिशा व विपरीत दिशा में जरूर हिलायें।
- एक दिन के बाद नीमास्त्र बनकर तैयार हो जाता है। फिर इसे सूती कपडे की सहायता से छानकर की किसी प्लास्टिक की बाल्टी या ड्रम में भरकर छायादार स्थान में ढककर रख दें।

नीमास्त्र बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- नीमास्त्र को हमेशा मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में बनायें।
- इसे हमेशा छायादार स्थान में ही रखें।
- इसके अच्छे प्रभाव के लिए इसका छिड़काव सुबह या शाम को ही करें।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत भूमि एवम पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशक खेती के मित्र कीटों को बिना नुकसान पहुचाये परभक्षी कीटों को भगाकर खेत और फसलों को कीटों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

फसल व फलदार पेड़ों पर नीमास्त्र का छिड़काव करता ग्रामीण